बाराबंकी के महिला बुनकर कारीगरों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का मानवशास्त्रीय अध्ययन

आभा सिंह
शोध छात्रा, मानवशास्त्र विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Abstract

बुनकर का नाम लेते ही दिमाग में भदोही के कालीन बनाने वाले बुनकर और बनारस के बनारसी साड़ी बनाने वाले बुनकरों का ध्यान आता है परन्तु बाराबंकी के बुनकर समाज का नाम शायद ही कोई जानता हो। बाराबंकी का बुनकर समाज एक ऐसा समाज है जो औद्योगिकीकरण के युग में भी अपनी पुरानी धरोहर को संजोये हुए है। इन वस्त्र निर्माताओं का कार्य क्षेत्र अब सीमित रह गया है जिस कारण इनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। औद्योगिकीकरण के युग में मशीनों के आविष्कार ने कई पीढ़ियों से वस्त्रों का निर्माण कर उन्हें सुसज्जित करने वाले समाज की पहचान छीन ली है और यह समाज आज भी अपनी खोई हुई पहचान पुनः प्राप्त करने के प्रयास में लगा है तथा अपने अस्तित्व को बनाऐ रखने के लिए संघर्ष कर रहा है।

बुनकर का सामान्य अर्थ

बुनकर तथा बुनाई दो भिन्न अर्थों वाले शब्द हैं, जिनके अर्थ एक दूसरे के पूरक रूप मे प्रयोग किये जाते हैं। बुनाई एक कला है जिसमें बुनने का कार्य किया जाता है और बुनकर एक वर्ग से सम्बन्धित शब्द है जो बुनाई करने वाले वर्ग या कारीगरों के लिये प्रयोग मे लाया जाता है। अन्य अर्थों में हम देखें तो पता चलता है कि बुनकर वर्ग के सहयोग के द्वारा ही मनुष्य ने सभ्यता के प्रथम सोपान का अनुसरण किया था।

डॉ. रीना खनूजा ने अपनी पुस्तक वस्त्र विज्ञान के सिद्धान्त में यह बताया है कि सभ्यता का पहला मंत्र मनुष्य ने वस्त्र के माध्यम से ही सीखा था, जब उसे यह ज्ञात हुआ था कि वह नग्न है।[2] सभ्यता के विकास के प्रारम्भिक चरण में मनुष्य पूर्णतया असभ्य था। जैसे–जैसे उसने विकास किया उसने अपने नग्न शरीर को ढकना शुरू किया तथा एक कपड़े से शरीर ढकने की कुशलता से प्रारम्भ करके धीरे–धीरे कलात्मक व तकनीकी विकास करते हुये उस एकल कपड़े को बड़े–बडे वस्त्रों का रूप दिया और सभ्यता की सीढ़ियां चढ़ता चला गया। समय के साथ वस्त्रों का विभिन्न प्रकार से शारीरिक उपयोग सभ्य होने का पुष्ट प्रमाण बनता चला गया इसी का परिणाम है कि वर्तमान में शरीर को वस्त्रों के माध्यम से ढकना सभ्यता का सूचक समझा जाता है।

तीन मूलभूत आवष्यकताओं रोटी, कपड़ा और मकान को विभिन्न समयों में पर्याप्त रूप मे अर्जित कर लेना ही किसी के सामाजिक होने का प्रमाण होता है। समाज में मनुष्य का जीवन मुख्य रूप से इन तीन आवष्यकताओं को पूरा करने से सम्बन्धित ही माना गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में हम न केवल वस्त्र का अभाव,

मांग व पूर्ति पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं, अपितु वस्त्र व उसके निर्माण को एक कला के रूप में तथा उनके निर्माताओं को कलाकार के रूप में अध्ययन कर रहे हैं। बुनकरों के रूप में हमारा ध्यान इस शोध पत्र में महिलाओं पर केन्द्रित रहेगा। अतः हमारे शोध पत्र का प्रारूप समस्या व समाधान प्रकार का नहीं है अपितु पूर्णरूप से वर्णनात्मक है।

सम्बन्धित शोध साहित्य

D. Narasimha Reddy, CHIP (Center for Handloom Information Policy)[1] द्वारा आन्ध्रा प्रदेश के महिला बुनकर कारीगरों पर किये गये शोध कार्य Women handloom weavers: Facing the brunt के अनुसार–इन्हें प्रतिदिन कार्य के 10–15 रूपये मिलते हैं। अविवाहित महिलाओं में कोई पारिवारिक सहयोग न होने के कारण इन्हें जीवन यापन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इनके पास रहने के लिए घर नहीं है, शौचालयों तथा स्नानागार की व्यवस्था नहीं है जिस वजह से खुले में इन कार्यों के लिए जाना पडता है। इन महिलाओं का शारीरिक शोषण भी इस अध्ययन में दर्शाया गया है।

शोध का उद्देश्य

बुनकर के कार्य में महिलायें रीढ़ की हड्डी का कार्य करती हैं। यह एक घरेलू कार्य के रूप में जाना जाता है। घरेलू उद्योग में कार्य करने वाले कारीगरों की आय का किसी भी प्रकार से ब्यौरा नहीं रखा जाता है जिससे इनकी आर्थिक, सामाजिक तथा वाणिज्यक स्थिति का सही आकलन कर पाना असम्भव हो जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य इन बुनकर महिलाओं की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना है।

शोध क्षेत्र

शोध कार्य का क्षेत्र बाराबंकी के औरेला नामक ग्राम है। बाराबंकी, फैजाबाद मण्डल का एक जिला है। इस जिले की मुख्य नदी घाघरा है। बाराबंकी का औरेला ग्राम, तहसील–सिरौली गौसपुर, ब्लॉक–रामनगर, जिला–बाराबंकी के अर्न्तगत आता है। इस ग्राम की कुल जनसंख्या 1459 है। शोध कार्य में औरेला ग्राम के मुस्लिम परिवारों को लिया गया है। इस ग्राम में 50 मुस्लिम परिवार है। जिनकी कुल जनसंख्या 489 है।

इस ग्राम में हिन्दू के साथ–साथ मुस्लिम तथा अन्सारी वर्ग के लोग रहते हैं जो जुलाहे का कार्य करते है। इस वर्ग का मुख्य कार्य ही कपड़ा बुनने का है। इस ग्राम का प्रत्येक मुस्लिम घर बुनाई का कार्य करता है जिन्हें आज की भाषा में बुनकर वर्ग कहा जाता है।

बाराबंकी के औरेला ग्राम की कार्यकुशलता की विशेषता

बाराबंकी के इस ग्राम का बुनकर समाज मुस्लिम समाज है। यह वर्ग परम्परागत ढ़ग से बुनाई का कार्य करता है। आज का युग जहाँ मशीनी युग है वहाँ इन लोगों का परम्परागत ढ़ंग से बुनाई का कार्य करना इन्हें सम्माननीय ढ़ंग से देखने पर मजबूर करता है। यह वर्ग भारत की हथकरघा परम्परा को सजोंये रखने का अनूठा कार्य कर रहे हैं। जिसके लिए इन्हें विभिन्न प्रकार से अपने आपको कष्ट में रखना भी पड़ता है। बुनकर का कार्य महिलाओं के द्वारा मुख्य रूप से किया जाता है। महिलाओं द्वारा घरेलू कार्य निपटाने के

बाद बुनाई का कार्य किया जाता है। इन कार्यों में परिवार का छोटे से लेकर बड़ा सदस्य भाग लेता है। परन्तु मुख्यतया घर की महिलाओं के द्वारा ही यह कार्य किया जाता है।

महिलाओं तथा पुरूषों में पायी जाने वाली जैविक विभिन्नता की उपस्थिति उनकी शारीरिक बनावट में विभिन्नता के रूप में भी स्पष्ट रूप से दिखायी देती है। यह विभिन्नता कार्य शैली मे विभिन्नता के रूप में भी दिखायी देती है। कुछ कार्यो को करने में महिलाये पारंगत होती हैं तथा कुछ कार्यों को करने में पुरूष। घर के पारम्परागत कार्यों जैसे– भोजन पकाना, घर की सफाई, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई इत्यादि को करने में महिलाओं को पुरूषों की अपेक्षा अधिक पारंगत माना जाता है। बुनाई का कार्य घरेलू उद्योग के अर्न्तगत आता है। घरेलू उद्योग इस प्रकार के उद्योग होते हैं जिनमें महिलाओ का विषेष योगदान रहता है। महिलाओं द्वारा पुरूषों के कार्यो को करने के बावजूद उन्हे उचित सम्मान न मिलना चिन्ता की विषय है।

निष्कर्ष

सामाजिक तथा आर्थिक शब्द कुछ क्षेत्रों मे एक दूसरे से सम्बन्धित अर्थों में प्रयोग होते हैं। आर्थिक स्थिति अर्थ से सम्बन्धित होती है। आधुनिक युग में समाज की परिभाषा अर्थ पर आधारित हो गयी है जो व्यक्ति अपने जीवन मे जितना अधिक धन अर्जित करेगा वह उतना ही अधिक प्रभावशाली तथा उच्च सामाजिक स्थिति वाला होगा। इसी तरह हम बुनकर समाज के सन्दर्भ मे देखते हैं कि इन महिलाओं के द्वारा विभिन्न बड़े व्यवसायियों द्वारा ऑर्डर देने पर स्टोल, गमछा, स्कॉर्फ, पोछा बनाया जाता है जिसके लिए इन्हें मजदूरी न के बराबर मिलती है। एक कपड़े की बुनाई में रोजाना इन्हें 6–7 घण्टे बुनाई के कार्य में देने पड़ते है तथा इतने अधिक कार्य समय के होने के बावजूद इन्हे एक कपड़े की बुनाई के 10–25 रूपये इन्हें मिलते हैं। इतनी कम आय में इनकी आर्थिक स्थिति को समझने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। परिवार के समस्त लोग मिलकर भी पूरे महीने का खर्च नहीं निकाल पातें। इस वर्ग की महिलायें बुनाई का कार्य अवश्य करती हैं परन्तु इन कार्यो को करने वालों में पुरूषों की गिनती की जाती है। पितृसत्तात्मक समाज होने के कारण परिवार में पुरूषों का ही वर्चस्व रहता है इस कारण महिलाओं को सिर्फ घर और बुनाई के ही कार्य से मतलब है। ये घर के महत्वपूर्ण मसलों पर अपनी राय न के बराबर ही देती हैं। इस वर्ग की महिलायें अशिक्षित है। बच्चों को मदरसे में पढ़ाया जाता है तथा लड़कों को बाहर स्कूलों में पढ़ने के लिए भेजा जाता है परन्तु लड़कियों को इतनी आज़ादी नहीं दी गयी है। यौवनावस्था को प्राप्त करते ही लड़कियों की शादी कर दी जाती है। महिलाओं तथा बड़ी लड़कियों को घर से ज्यादा बाहर रहने की आजादी नहीं है। आवश्यक कार्यों के लिए भी घर की किसी बड़ी महिला के साथ ही निकलती है। आधुनिक युग में अधिकांशतः पश्चिमीकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। औरेला ग्राम में पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण सिर्फ पुरूषों के पहनावे के रूप में अधिक देखा जाता है। पुरूष वर्ग को हर प्रकार के कार्य तथा पहनावे धारण करने की स्वतन्त्रता है परन्तु महिलाओं के सन्दर्भ में किसी भी प्रकार की स्वतन्त्रता देखने को नहीं मिलती है। महिलाओं के द्वारा बुनाई का कार्य किया जाता है परन्तु जब आर्थिक रूप से सुदृढ़ होने की बात आती है तो पुरूषों का नामा आता है। इन महिलाओं को आर्थिक आजादी नहीं है, ये प्रत्येक कार्य अपने पति या घर के बूढ़े–बुजुर्ग से पूछे बिना नहीं कर सकती। किसी भी समाज के विकास के लिए उस समाज के

लोगों के मध्य पहनावे मे विकास होना आवश्यक नहीं है वरन् समाज के सही मायने में विकास के लिए विचारों का विकसित होना तथा विचारों में पश्चिमीकरण का सही रूप में आना आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 शर्मा आनन्द,साधना बधेला. वस्त्र विज्ञान एवं धुलाई कार्य. 2005, रिसर्च पब्लिकेशन पृ0 सं0 1

2 खनूजा, डॉ. रीना, वस्त्र विज्ञान के सिद्धान्त, 2012, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा पृ0 सं0 2

3 Reddy, D.Narasimha. Centre for Handloom Information and Policy,Women handloom weavers: Facing the brunt, page no 2-4

4 Barabanki.nic.in dated 7-8-2014